अग्निपुराण में ब्रह्मतत्त्व एवं गीतासार

डॉ0 प्रतिभा

अग्निपुराण में आत्मा को भी वेद और उपनिषदों की तरह परमतत्व, ब्रह्म या सत्य का स्वरूप माना गया है।[1] इसे अजर और अमूर्त माना गया है। यह जीव और जड़ जगत् से बिल्कुल भिन्न है। मन, बुद्धि और अहंकार से परे है। यह सर्वथा असांसारिक, सर्वव्यापक, ज्योतिर्मय, नित्य–शाश्वत एवं सत्य है। आत्मा कर्मबन्धन से मुक्त है। चिद्रूप होने के कारण यह ब्रह्म से अभिन्न है। आत्मा और ब्रह्म दोनों एक ही हैं। उपनिषद् की भाषा में परम तत्त्व ही अन्तिम तत्त्व है, सर्वाधार है, संसार की सारी वस्तुओं का मूलाधार है। केवल यही तत्त्व जिसे ब्रह्म कहा जाता है, संसार का मूल कारण है। इसी से सारे संसार की उत्पत्ति है, यही विश्वसत्ता का नियामक आधार है। इसी में अन्ततः सब लय हो जाते हैं।